52

जब बाबुल आपको फुसलाने की कोशिश करे

(17:1–6, 9, 15, 18)

एक शाम आप टीवी देख रहे हैं और एक अनाउंसर ब्रेकिंग न्यूज़ की घोषणा करती है: ''हम चैनल 6 के न्यूज़ ब्रेक के लिए इस कार्यक्रम को रोक रहे हैं। सिडार रिज नगर के बाहर तूफ़ान ने भयंकर तबाही मचा दी है। पूरा विवरण 10:00 बजे।'' बाद में अन्धेरा होने पर एक विज्ञापन में तबाही की कुछ तस्वीरें दिखाते हुए कुछ विवरण देते हुए और ''पूरी कहानी 10:00 बजे'' बताने की प्रतिज्ञा करते हुए एक जगह दिखाई जाती है। रात 10:00 बजे, तूफ़ान पर पूरी कवरेज के साथ कि कहां कितना नुकसान हुआ, कितने लोग मारे गए और सिडार रिज के लोगों पर क्या असर हुआ, पूरी रिपोर्ट देना आरम्भ होता है।[1]

बड़े नगर बाबुल के विनाश के बारे में प्रकाशितवाक्य में ऐसा ही दृश्य मिलता है: अध्याय 14 में एक स्वर्गदूत आकाश में से यह घोषणा करते हुए उड़ता है, ''गिर पड़ा, वह बाबुल गिर पड़ा, जिसने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है'' (आयत 8)। बाबुल की न पहचान हुई, न उसका वर्णन हुआ। उसके गिरने का कोई विवरण नहीं दिया गया। केवल घोषणा हुई।

अध्याय 16 में क्रोध के कटोरे बाबुल के विनाश का चरम थे: ''और उस बड़े नगर के तीन टुकड़े हो गए और जाति-जाति के नगर गिर पड़े, और बड़ा बाबुल का स्मरण परमेश्वर के यहां हुआ कि वह अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा उसे पिलाए'' (आयत 19)। इस भाग में बाबुल को नगर के रूप में दिखाया गया था। परमेश्वर स्पष्ट रूप से उससे अप्रसन्न था, परन्तु कई सवालों के जवाब अभी देने बाकी थे, ''क्या बाबुल सचमुच में नगर था और यदि था तो वह कौन सा नगर था''; ''बाबुल ने ऐसा क्या किया कि जिससे परमेश्वर का क्रोध उस पर पड़ा?''; ''उसका विनाश किस प्रकार हुआ?''

अन्त में 17 से 19 अध्यायों में हमें बड़े नगर बाबुल के विनाश की ''पूरी कहानी'' बताई जाती है: अध्याय 17 में हमें बताया जाता है कि बाबुल कौन (और क्या) है। अध्याय 18 में उसके गिरने को चित्रित किया जाता है। अध्याय 19 में हम उसके गिरने पर विश्वासियों में पाए जाने वाले आनन्द को देखते हैं। (बाबुल के गिरने का विवरण देने के लिए दिए गए स्थान से आरम्भिक मसीही लोगों और हमारे लिए इस घटना के महत्व का संकेत मिलता है।)

यह पाठ अध्याय 17 की पहली छह आयतों पर केन्द्रित रहेगा। हम बड़े नगर बाबुल की पहचान करना चाहते हैं: वह कौन थी और कौन है। विशेष रूप से हम शैतान की योजना में बाबुल की खास जगह पर ज़ोर देना चाहते हैं: वह शैतान की *तीसरी* साथी है। पहला साथी समुद्र में से निकलने वाला पशु था (जिसे आमतौर पर "पशु" कहा जाता है); दूसरा पृथ्वी में से निकलने वाला पशु (जिसे "झूठा भविष्यवक्ता" भी कहा जाता है) था; बाबुल तीसरा है। पशु (यूहन्ना के समय में, रोमी साम्राज्य) शैतान द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले ढंग *धमकी* को दर्शाता है।[2] झूठा भविष्यवक्ता (यूहन्ना के समय में राजा की पूजा करवाने वाले लोग) शैतान द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले *धोखे* का दूसरा ढंग है।[3] बड़ा नगर बाबुल तीसरे ढंग *फ़ुसलाने* को दर्शाता है।

आपका हृदय (भीतरी मनुष्य) बुद्धि, भावना और इच्छा से बना है। शैतान धमका कर आपकी *इच्छा* को मोड़ने की कोशिश करता है। यदि वह सफल नहीं हो पाता तो वह धोखे से आपकी *बुद्धि* को धुंधला करता है। परन्तु यदि आप इतने पक्के हैं कि आप उसके दबाव में नहीं आते और इतने संवेदनशील हैं कि आप उसके झूठ पर विश्वास नहीं करते तो वह आपको छोड़ नहीं देता: उसके पास अभी भी बड़ा बाबुल है, जो आपकी *भावनाओं* के काले पक्ष को आकर्षित करेगा। वह आपको फुसलाने की कोशिश करेगा: और अक्सर वह इसमें सफल हो ही जाता है।

बाबुल एक भयानक शत्रु है। मैंने इस पाठ का शीर्षक "जब बाबुल आपको फुसलाने की कोशिश करे" रखा है। इस शीर्षक के अपेक्षित प्रभाव के लिए "बाबुल के बजाय" किसी सुन्दर महिला का नाम दे दें।[4] अपनी सुन्दर पत्नी को छोड़ किसी और का नाम चुनें। अपने इस उद्देश्य के लिए संसार की सबसे कामुक स्त्री का ध्यान करें। यदि वह आपको फुसलाने की कोशिश करे तो आप क्या करेंगे? यदि वह आपको मनुष्यों के और परमेश्वर के नियमों को तोड़ने के लिए उकसाने की कोशिश करे तो आप क्या करेंगे? आप उसे कैसे जवाब देंगे?

यह पाठ वचन में से तीन सच्चाइयों पर केन्द्रित रहेगा। मुझे और आपको बाबुल के घातक आकर्षण से बचना है तो चौकस रहना आवश्यक है।

उसकी कामना को ठुकराया नहीं जा सकता (17:1-6, 9, 15, 18)

वचन का आरम्भ होता है, "और जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे, उन में से एक ने आकर मुझ से यह कहा कि इधर आ" (आयत 1क)। यह नहीं बताया गया कि सात कटोरों में से यह कौन सा था।[5]

बहकाने वाली

स्वर्गदूत ने यूहन्ना को बताया "मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊं, जो बहुत से पानियों पर बैठी है" (आयत 1ख)।[6] आयत 5 में इस "बड़ी वेश्या" का परिचय "बड़ा बाबुल" के रूप में कराया गया है। बाद में स्वर्गदूत "बुहत से पानी" की व्याख्या करता है:

''जो पानी तू ने देखे, जिस पर वेश्या बैठी है, वे लोग, और भीड़ और जातियां, और भाषाएं हैं'' (आयत 15)।[7] ''लोग और भीड़ और जातियां और भाषाएं'' के चौहरे वर्गीकरण में हर किसी को शामिल किया गया है।[8] ''बैठी है'' वाक्यांश से संकेत मिलता है कि बड़ी वेश्या संसार के बेचैन लोगों *पर राज करती* है।

''वेश्या'' शब्द तुरन्त हमें बताता है कि उसका काम दुष्कर्म करना था(यदि इसमें कोई संदेह हो कि वेश्या के दांव-पेंच दुष्कर्म करना हो सकते हैं तो नीतिवचन 5, 7 और 9 पढ़ें।) अपने काम में मिली सफलता पर उसके आनन्द पर आयत 2 में ज़ोर दिया गया है: ''जिस के साथ पृथ्वी के राजाओं ने व्यभिचार किया;'' (आयत 2क)।[9] ''पृथ्वी के राजा'' संसार में प्रभावशाली हाकिम थे।[10] ये लोग अपनी प्रजा को जिधर चलाते, प्रजा उधर ही चलती थी: ''और पृथ्वी के रहने वाले उसके व्यभिचार की मदिरा से मतवाले हो गए थे''[11] (आयत 2ख)। अल्कोहल! परीक्षा का सामना करने की शक्ति कम कर सकती है और उस बड़ी वेश्या को अपने धंधे की हर युक्ति का पता था।

फिर स्वर्गदूत प्रेरित को ''जंगल को ले गया'' (आयत 3क)।[12] यूहन्ना आत्मा के नियन्त्रण में रहा।[13] यह जंगल वही था, जहां परमेश्वर द्वारा अध्याय 12 वाली स्त्री को सुरक्षित रखने के लिए ले जाया गया था (12:14)। हो सकता है कि यूहन्ना को वहां इसलिए ले जाया गया हो कि वह उस बड़ी वेश्या से बचा रहे। शायद यह कोई ऐसी जगह थी, जहां से वह उसे स्पष्ट देख सकता था।[14]

वहां पहुंचने पर उसने एक अजीब नज़ारा देखा: ''और मैंने किरमिजी रंग के पशु पर[15] जो निन्दा के नामों से छिपा हुआ था और जिस के सात सिर और दस सींग थे, एक स्त्री को बैठे हुए देखा'' (आयत 3ख)। किरमिजी पशु जिस पर वह बैठी हुई थी, वही है जिसका उल्लेख अध्याय 13 में किया गया था:[16] ''और मैंने एक पशु को समुद्र में से निकलते हुए देखा, जिसके दस सींग और सात सिर थे; और उसके सींगों पर दस राजमुकुट और उसके सिरों पर निन्दा के नाम लिखे हुए थे'' (13:1)।[17] अध्याय 17 इस भयानक जीव का अतिरिक्त विवरण जोड़ता है: उसका रंग अपने स्वामी अर्थात अजगर (शैतान) जैसा लाल था (12:3)।[18] पहले परमेश्वर की निन्दा करने वाले नाम केवल उसके सिरों पर थे; अब वह निन्दा से *भरा हुआ* था।[19] फिर ''बैठे हुए'' शासन और नियन्त्रण का संकेत देता है। अनुभवी सवार के अपने घोड़े पर नियन्त्रण की तरह स्त्री का पशु पर नियन्त्रण था।[20]

4 और 5क आयतों में स्त्री का विवरण दिया गया है: ''यह स्त्री बैंजनी और लाल रंग के कपड़े पहने थी और सोने और बहुमूल्य मणियों और मोतियों से सजी हुई थी, ... उसके माथे पर यह नाम लिखा था, 'भेद[21]-बड़ा बेबीलोन, ...''' (बड़ा बाबुल, पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता का चित्र देख।)

बैंजनी और चटकीला लाल रंग शाही और विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा पहना जाता था।[22] सोना, बहुमूल्य मणि और मोती केवल धनी लोग ही इस्तेमाल कर सकते थे। बाबुल ने ''रानी जैसा'' लिबास पहना था (18:7)। यह घुमक्कडों का भड़कीला वस्त्र नहीं था, वह ऊंचे समाज में रहती थी। आज वह दुनियादार, परेशान, पतित ''ऐश परस्त'' समाज का

भाग होगी। उसे टेलीविज़न के कार्यक्रमों ''धनवान और प्रसिद्ध लोगों की जीवन शैली'' में दिखाया जाता है।

नगर

आगे बढ़ने से पहले हमें ''बड़ी वेश्या'' को पहचानना आवश्यक है। वचन में इसे बार-बार ''बाबुल'' कहा गया है।[23] बाबुल या बेबीलोन का प्राचीन नगर मेसोपोटामिया पुराने ज़माने का प्रसिद्ध नगर था। वहां ''शहरी विलासिता, शिक्षा और कारोबार पुरुषों का ध्यान खींचने लगा था।''[24] यह ''अपनी नैतिक भ्रष्टता के लिए प्रसिद्ध संसार की राजनैतिक और धार्मिक राजधानी'' था।[25] यहूदी सोच के अनुसार, बाबुल अभक्ति और परमेश्वर के लोगों से घृणा का दूसरा नाम था। बाबुल के लोगों ने 586 ई.पू. में यरूशलेम का विनाश किया था और इस्राएलियों को बन्दी बनाकर विदेश ले गए थे। ''*बड़ा* बाबुल'' शब्द दानिय्येल 4:30 से लिया गया और इसमें उसके वास्तविक महत्व का नहीं, बल्कि उसके काल्पनिक महत्व का संकेत है।

ऐसा लगता नहीं है कि पवित्र आत्मा के मन में कोई नगर (आयत 18; 16:19) अर्थात बाबुल के मन वाला नगर था। सवाल है कि फिर ''कौन सा नगर है?'' इसका उत्तर देने के लिए हमें यह पूछना आवश्यक है कि ''वह बड़ा नगर, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज करता है'' (आयत 18) शब्द पढ़ने के समय यूहन्ना के पाठकों के ध्यान में क्या आया होगा? एकमात्र नगर जो इस योग्यता को पूरा करता है, रोम था। (''राज करता है'' शब्द पर ध्यान दें, जो वर्तमानकाल में है; ''बड़ा नगर'' प्रकाशितवाक्य लिखे जाने के समय राज कर रहा था।) जेम्स एफर्ड ने लिखा है, ''स्पष्टतया वह स्त्री रोम है। ... यूहन्ना इसकी तस्वीर बनाकर बड़े-बड़े अक्षरों से उस पर लिखकर इससे अधिक स्पष्ट नहीं बता सकता है।''[26]

आरम्भिक पाठकों के मन में यदि इस पर कोई सवाल था तो निश्चय ही यह आयत 9 के ''संकेत'' से जो इतना अस्पष्ट नहीं है, मिटा दिया गया था: ''वे सातों सिर सात पहाड़ हैं, जिन पर वह स्त्री बैठी है।'' हेनरी स्वेट ने लिखा है, ''इन शब्दों के अर्थ के लिए कोई भी तर्कसंगत संदेह माना नहीं जा सकता। रोम के सात पहाड़ लातीनी कवियों के लिए साधारण जगह [रूपक] थे। ...''[27] होमेर हेली ने माना कि ''तिबर की सीमा पर सात पहाड़ियां, जिन पर रोम बसा हुआ था, रोम के कवियों और लेखकों का विषय होती थीं। ... यूहन्ना के पाठकों के ध्यान में तुरन्त रोम ही आना था।''[28]

वे लेखक भी, जो यह नहीं मानते कि बड़ा बाबुल रोम को कहा गया है, इतना मानते हैं कि आरम्भिक मसीही लोगों के मन में पहले यही विचार आया होगा। यदि पवित्र आत्मा की इच्छा यूहन्ना के पाठकों के मन में रोम का विचार न लाने की थी तो वह अवश्य एक स्पष्टीकरण दे देता कि ''मेरे कहने का अर्थ रोम *नहीं* है।'' ब्रूस मैज़गर ने लिखा है, ''जैसे यहूदियों के लिए हर बुराई और सताव का प्रतीक रोम था, वैसे ही यूहन्ना के लिए रोम एक और बाबुल था, क्योंकि हर प्रकार की दुष्कर्म भरी विलासिता और बुराई, विलास प्रिय

भौतिकवाद और स्वार्थ में जीना उसी से आरम्भ हुआ।''[29]

परीक्षा

परन्तु हम में से अधिकतर लोग फ्रैंक पैक से सहमत होंगे कि ''बड़ा बाबुल प्राचीन रोम नगर की भ्रष्ट मूर्तिपूजा और राजा की पूजा से कहीं अधिक संकेत देता है। यह युगों से अलग-अलग रूपों में परमेश्वर को ठुकराने वाले संसार के सब प्रभावों तथा शक्तियों का संकेत है।''[30]

हमने नगर से आरम्भ किया था, इसलिए पहली प्रासंगिकता जो मेरे ध्यान में आती है वह उस बड़े नगर जैसी है, जिसमें मैं गया हूं, जो कला और संस्कृति का केन्द्र तो है, बुराई और भ्रष्टाचार का गढ़ भी है। नौजवानों (और जो अभी जवान नहीं हैं) के कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, जिन्होंने ''बड़ा नगर'' के सायरन की पुकार सुनी और वहां चले गए, और उन्हें उसकी जीवनशैली में ढलने में अधिक समय नहीं लगा।

परन्तु हमें यह समझना आवश्यक है कि हमें बड़ी वेश्या से फुसलाए जाने के लिए न्यू यार्क, लॉस एंजिल्स, लंदन या पैरिस जाने की आवश्यकता नहीं है। बड़ा बाबुल हर वह जगह है, जहां उत्तेजना, आराम और लाभ जीवन के लक्ष्य हैं। आप किसी छोटे नगर अमेरिका या वागा-वागा, या ऑस्ट्रेलिया या कहीं और रहते हैं, वह वेश्या आपके कान में फुसफुसाते हुए आपको ''सीधे और तंग'' मार्ग से भटकाने की कोशिश करती है (देखें मत्ती 7:14; KJV)। बाबुल के आकर्षणों के विषय में क्लेरेंस मेकाटर्नी ने लिखा है:

> हे संसार, हे संसार तू कितना धोखेबाज़ है! ... तू हमें अपनी चापलूसी से बहकाता और अपने रंगदार चेहरे से हमें आकर्षित करता है, ताकि अन्धे मोह और तेरे लिए प्रेम की आग में, तेरे झूठे भ्रष्ट आनन्द के एक और पल के लिए हम आनन्द से अपनी आत्माओं को बेच दें, अपने परमेश्वर को भूल जाएं, अपने प्रभु को फिर से क्रूस पर चढ़ा दें और अनन्त प्रसन्नता की अपनी आशा से हाथ धो बैठें।[31]

इस बात पर कभी संदेह न करें कि बाबुल को *आपकी* कमज़ोरियों का पता है (याकूब 1:14) और वह उनका शोषण करने की कोशिश करेगा।

फुसलाए जाने से बचने के लिए, हमें पहले यह समझना आवश्यक है कि परीक्षा प्रलोभन है, यानी पाप आनन्ददायक हो सकता है, यानी जिससे निषेधित वस्तु आकर्षित करती है। यदि यह प्रेरित विलास प्रिय बाबुल को देख ''बिल्कुल हैरान रह गया'' था (प्रकाशितवाक्य 17:6; NLT),[32] तो मुझे और आपको तो अपनी आंखें चुंधियाने की उम्मीद करनी चाहिए। जब वह फुसफुसाती हुई कहती है, ''चोरी का पानी मीठा होता है, और लुके-छिपे की रोटी अच्छी लगती है'' (नीतिवचन 9:17), तो हम हिचकिचाने का साहस नहीं करते। सदियों पहले आपके हाथ न आने वाले यूसुफ की तरह (उत्पत्ति 39:12) हमें भी ''भाग'' जाना चाहिए (2 तीमुथियुस 2:22)।

उसके पतन पर संदेह नहीं करना चाहिए (17:1, 4-6)

फुसलाए जाने से बचने के लिए हमें धरातल की चमक के नीचे देखने की योग्यता बढ़ाने की आवश्यकता है।

गन्दा

तड़क-भड़क के नीचे बाबुल ''बड़ी वेश्या'' के अलावा और कुछ नहीं था (आयत 1)। माइकल विल्कोक ने उसका यह रूप पेश किया है:

> ... [बाबुल] ने जो कुछ भी अपने ऊपर लिखा है, वह व्यभिचार, व्यभिचार, व्यभिचार है। हम इस शब्द के यूनानी मूल *porn-* से ही परिचित हैं; और यूहन्ना ने इसे स्वाद के रूप में नहीं, बल्कि गन्दे स्वाद को थूकने की बेकार कोशिश के रूप में[33] पांच बार दोहराया।[34]

प्राचीन रोम में सिर पर पट्टियां बान्धना एक फैशन था और रोमी वेश्याएं कई बार विज्ञापनों के लिए अपने माथे पर इन्हें बान्धती थीं। वेश्या के माथे पर उसका नाम लिखा था:[35] ''**बड़ा बाबुल पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं[36] की माता**'' (आयत 5)। (वह वेश्या तो थी ही अपनी बेटियों को भी वेश्याएं बनना सिखा रही थी।)

हाल के वर्षों में वेश्या को अच्छा दिखाने के लिए नाटकों, पुस्तकों, फिल्मों और टेलीविज़न के कार्यक्रमों में कई प्रयास हुए हैं।[37] तो भी बाइबल आज भी वही कहती है, जो पहले कहती थी कि वेश्यावृत्ति पाप है, एक ऐसा पाप जो मन फिराकर उससे न मुड़ने वाले के लिए घातक हो सकता है।[38]

बाबुल की वेश्यावृत्ति में निश्चय ही, शारीरिक वेश्यावृत्ति शामिल थी, परन्तु यह केवल यहां तक सीमित नहीं थी।[39] बड़ी वेश्या ''सत्ता और विलासिता के हर संदेहास्पद लक्ष्य के लिए सही और उपयुक्त वेश्यावृत्ति[40]'' की दोषी थी।[41] पुराने नियम में, ''वेश्या'' शब्द अपने आप को संसार को बेच देने वाले व्यक्ति के लिए इस्तेमाल होता था: नीनवे मन को जीतने वाली वेश्या थी (नहूम 3:4)।[42] सोर कारोबार की वेश्या थी (यशायाह 23:8, 17)। बाबुल भोग-विलास की मलिका थी (यशायाह 47:5)। यरूशलेम धार्मिक वेश्यावृत्ति का दोषी था (यशायाह 1:21; यिर्मयाह 2:20; यहेजकेज 16:15, 23-29; होशे 9:1)। संसार के देवताओं के लिए जब हम परमेश्वर को छोड़ देते हैं तो हम उसकी व्यवस्था ही नहीं, उसका दिल भी तोड़ते हैं।

अध्याय 17 वाली वेश्या को 19 और 21 अध्यायों वाली दुल्हन से अलग बताया गया है:[43] वेश्या दौलत पहने है, जबकि दुल्हन ने धार्मिकता का लिबास पहना है। वेश्या वासना से प्रेरित है, जबकि दुल्हन प्रेम से चलती है। वेश्या शरीर का सौदा करती है जबकि दुल्हन समर्पण के कारण प्रेम देती है। वेश्या स्वार्थी है, जबकि दुल्हन को अपने पति (यीशु) का ध्यान है।[44] दोनों का स्वभाव, स्थिति और भविष्य अलग-अलग है।

दोनों आयतें बाबुल का आकर्षक वस्त्र उतारकर उसकी असलियत सामने लाती हैं:

आयत 4 में उसे सोने का कटोरा लिए, ऐसे देते हुए दिखाया गया है, जैसे जान डालने वाला तरल उमड़ रहा हो। पास से देखने पर वह कटोरा ''उसके व्यभिचार की अशुद्ध वस्तुओं से भरा हुआ'' मिलता है। वेश्या मन बहलाने की पेशकश करती है, परन्तु जो कुछ वह देती है, वह गन्दा है।

उसकी असलियत की सबसे स्पष्ट बात आयत 6 में मिलती है ''मैंने उस स्त्री को पवित्र लोगों का और यीशु के गवाहों का लहू पीने से मतवाली देखा'' (आयत 6क)। ''पवित्र लोगों'' और ''यीशु के गवाहों''[45] ने उसकी कामुक बुराइयों का विरोध किया था, जिस कारण वह क्रोधित हो गई। उसके लिए अपनी ''मोहिनी शक्ति'' से प्रभावित न होने वालों को सताना और मारना राक्षसी आनन्द देने वाला था।

दादी कहा करती थी, '''सुन्दर' वह है जो 'सुन्दर काम करे।''' बड़ी वेश्या बाहर से सुन्दर दिखाई देती हो सकती है, परन्तु उसके कामों से उसकी कुरूपता सामने आ गई।

नगर

''कुरूप'' शब्द कैसरों के रोम पर लागू करना कठिन नहीं है। उसके अपने ही इतिहासकारों के अनुसार रोम गुप्त में नहीं, बल्कि खुलेआम पतन की ओ जा रहा था।[46] रोमी इतिहासकार टेसिटुस ने रोम को वह जगह बताया है, ''जहां संसार की सब खतरनाक और शर्मनाक बातें इकट्ठा होती हैं और बसेरा करती हैं।''[47] दार्शनिक सेनेका ने रोम को ''गन्दी नाली'' कहा।[48]

रोम को संसारभर में फैले उसके अधर्मी प्रभाव के कारण ''वेश्याओं की माता'' कहा जाता था। स्वेट ने लिखा है, ''सब अधीन जातियों की सब *pornai* [अर्थात वेश्याएं] उसकी संतान हैं; राज्यों की सब बुराइयों और अन्धविश्वासों ने उसी का दूध पिया था।''[49]

इसके अलावा रोम ही पवित्र लोगों की हत्या का ज़िम्मेदार था। नीरो के अत्याचारों से उसकी अपनी प्रजा ही तंग पड़ गई थी। डोमिशियन के आदेशों ने राजा की पूजा से इनकार करने को मृत्यु दण्ड दिया जाने योग्य अपराध करार दिया था।

संरक्षण

फिर हम कहते हैं कि वेश्या केवल रोम का प्रतिनिधित्व ही नहीं करती; वह हमारे रास्ते में आने वाली हर परीक्षा की प्रतिनिधि है। इन परीक्षाओं में फंसने से बचने के लिए हमारे लिए यह देखना आवश्यक है कि वे वास्तव में क्या हैं। वेश्या निषेधित आनन्द की प्रतिज्ञा करती है, परन्तु ''उसके पांव मृत्यु की ओर बढ़ते हैं'' (नीतिवचन 5:5क)। खोजी नज़र तड़क-भड़क और भलाई में अर्थात उसमें जो अस्थाई है और जो सदा तक रहने वाला है, अन्तर करना सीख जाती है। स्पष्ट दिख जाने पर परीक्षाएं आकर्षक नहीं, बल्कि घृणित नज़र आती हैं।

उसके विनाश में देर नहीं लगेगी (17:1)

तीसरा, बड़ी वेश्या के दुष्कर्म के लिए हमें यह समझना आवश्यक है कि उसका विनाश तय है।

बर्बादी

दर्शन में, उसकी स्थिति ईर्ष्या दिलाने वाली लगती है यानी लगता है कि "वह जीत गई" पर हमें दर्शन के उद्देश्य को नहीं भूलना चाहिए। स्वर्गदूत "उस बड़ी वेश्या का दण्ड" दिखा रहा था (17:1)। एक पुरानी कहावत है, "जितने वे बड़े होंगे, उतना ही उन्हें गिराना कठिन है।" वह कहावत गोलियत पर लागू हुई। यह बड़े बाबुल पर भी लागू हुई।

रोम

पहली शताब्दी के मसीही लोगों से दर्शन में कहा गया, "सुन्दरता सदा नहीं रहती, रोम के दिन गिने हुए हैं।" जे.डब्ल्यू.राबर्ट्स ने टिप्पणी की, "यूहन्ना को उस शक्तिहीन कारक अर्थात रोम के नगर और साम्राज्य के विनाश की भविष्यवाणी पूरा होने से अच्छे निष्कर्ष दिखाना सम्भव नहीं लगता।"[50]

हल

आज के मसीही लोगों के लिए दर्शन में इस बात की घोषणा है कि "पाप का आनन्द थोड़ी देर का" है (इब्रानियों 11:25) और अन्त में यह मृत्यु ही लाता है (रोमियों 6:23) इसी कारण प्रेरित यूहन्ना ने परमेश्वर के हर बालक से आग्रह किया कि:

> तुम न तो संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात शरीर की अभिलाषा, और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है। *और संसार* और उसकी अभिलाषाएं दोनों *मिटते जाते हैं,* पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा (1 यूहन्ना 2:15–17)।

सारांश

बड़ी वेश्या के बहकावे से बचने के ढंग के और भी सुझाव दिए जा सकते हैं, जैसे "यीशु को ताकते रहें ताकि आप संसार की चकाचौंध में फंस जाएं।" अभी के लिए बेशक हम वचन में सुझाई गई तीन बातों पर ज़ोर दे रहे हैं: (1) पाप के आनन्द को कम न जानें; वे प्रलोभन में डालने वाले हैं। (2) पाप की असलियत को नज़रअंदाज न करें; यह अपमानजनक है। (3) इस संसार से प्रेम न करें; यह मिटता जाता है।

पौलुस शरीर की कमज़ोरियों को जानता था (रोमियों 7:14, 15)। उसे अपने शरीर को वश में रखने के लिए इसे अनुशासन में रखना पड़ता था, ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह

दूसरों को तो सिखाता रहे परन्तु स्वयं नाश हो जाए (1 कुरिन्थियों 9:27)। यदि शरीर के साथ पौलुस की लड़ाई थी, तो हमारी लड़ाई कितनी बड़ी है!

मध्यकाल में, स्पेनी परीक्षक ''कुंआरी'' नामक सताव का एक ढंग इस्तेमाल करते थे। इसमें भड़कीले वस्त्र पहने एक सुन्दर स्त्री का रूप होता था। उसके चेहरे पर कामुक मुस्कान होती थी और उसकी बाहें फैली होती थीं। जिसकी परीक्षा होनी होती थी उसे ''कुंआरी का चुम्बन लेने के लिए'' उसकी बाहों में धकेल दिया जाता था। फिर उसकी बाहें उसे कसकर जकड़ लेतीं और वह व्यक्ति सैकडों छिपे हुए चाकुओं से छलनी हो जाता था।[51] ऐसे ही, बड़ा बाबुल लोगों को उसके निषेधित सुखों का आनन्द लेने के लिए बुलाने पर एक सुन्दर चेहरा बना लेती है। परन्तु अन्त में वह हज़ारों दु:खों से छलनी करके उनकी आत्मा को नरक में भेज देती है (रोमियों 6:23)। जब वह इशारा करे तो *भाग जाओ*! (देखें 1 कुरिन्थियों 6:18; 10:14; 1 तीमुथियुस 6:11; 2 तीमुथियुस 2:22.)[52]

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पुस्तक में ''*दो पशु* (अजगर के साथी)'' पर एक चार्ट है। आप चाहें तो अजगर को तीसरा साथी दिखाते हुए इस पर बाबुल जोड़ सकते हैं: पहले कॉलम में, ''**बड़ा बाबुल,** बड़ी वेश्या'' रखें। दूसरे कॉलम में ''परीक्षा और प्रलोभन'' (''गैर मसीही जीवन शैली'') रख सकते हैं। तीसरे कॉलम में ये शब्द हो सकते हैं: ''सांसारिक आकर्षण वाला **रोम नगर।**'' अन्तिम कॉलम में ''दुष्कर्म: काम'' रख सकते हैं।

इस पाठ के और शीर्षक इस प्रकार हो सकते हैं: ''बड़ा बाबुल गिर गया!''; ''व्यक्तिगत परीक्षा''; ''बुराई का दिखावा'' विलियम बार्कले ने ''नगर, जो वेश्या बन गया'' शीर्षक दिया था। एक और सम्भावना (बिस्ले मुर्रे से लिया गया) है ''बड़ी वेश्या का राज और बर्बादी।'' यदि आपको ऊटपटांग शीर्षक आकर्षित करते हैं तो उनमें एक यह है: ''हर गलत जगह प्रेम की तलाश।''

टिप्पणियां

[1]यदि आप ऐसे समाज में रहते हैं, जहां टेलीविज़न का उदाहरण देना अनुपयुक्त हैं तो तीन आदमियों के एक गांव में भागने की तस्वीर बना सकते हैं, जिसमें एक दूसरे के पीछे, जिसके पास विनाश का समाचार है, भाग रहा है: पहले आदमी को केवल इतना पता है कि विनाश हुआ है। दूसरे को कुछ बातें पता हैं। तीसरा विस्तार से बता सकता है कि क्या-क्या हुआ। [2]इस पुस्तक के आरम्भ में पाठ ''देखो, सुनो और समझो'' देखें। विशेषकर इस पुस्तक में ''दो पशु (अजगर के साथी)'' पर चार्ट फिर से देखें। [3]इस पुस्तक के आरम्भ में ''वह बड़ा भरमाने वाला'' पाठ देखें। फिर, इसी पुस्तक में ''दो पशु (अजगर के साथी)'' पर चार्ट देखें। [4]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास में या प्रवचन के रूप में करते हैं तो किसी स्त्री का नाम इस्तेमाल करें जिसे आपके देश के अधिकतर पुरुष आकर्षक मानते हों। मैं *स्त्री* का उदाहरण इसलिए दे रहा हूं क्योंकि बड़े बाबुल को स्त्री के रूप में चित्रित किया गया है; परन्तु सुनने वाली स्त्रियों के लाभ के लिए आप किसी प्रसिद्ध

पुरुष का नाम ही ले सकते हैं जो बहुत सुन्दर हो।[5]यह सातवां हो सकता है, जिसके कटोरे से बाबुल प्रभावित हुआ (16:17-19), परन्तु यह विवरण महत्वपूर्ण नहीं है, महत्व इस बात का है कि लगभग हर पहचानी जाने वाली भाषा में 21:9 में एक और स्त्री का परिचय देते हुए मसीह की दुल्हन शब्द का इस्तेमाल किया गया है। हमें स्पष्ट रूप से दोनों स्त्रियों में तुलना करने की उम्मीद थी। इस पर हम आगे और चर्चा करेंगे।[6]बड़े बाबुल के साथ इस्तेमाल किया गया अधिकतर रूपक फरात पर बाबुल के सम्बन्ध में पुराने नियम के रूपक जैसा ही है। उदाहरण के लिए आयत 1 की तुलना यिर्मयाह 51:13 से करें।[7]कुछ लेखकों ने कहा है कि वेश्या रोम नगर नहीं हो सकता क्योंकि रोम बहुत पानियों के निकट नहीं था। परन्तु आयत 15 से हमें पता चलता है कि पवित्र आत्मा सांसारिक पानी की नहीं बल्कि *लोगों* की बात कर रहा था।[8]पहले भी हमने ऐसी सूचियां देखी हैं: 5:9; 7:9; 10:11; 11:9; 13:7; 14:6. *चार* शब्दों का इस्तेमाल इस विचार पर ज़ोर देता है कि सारी मनुष्यजाति इसमें शामिल थी। (''चार'' मनुष्यजाति का अंक है।) ''लोगों'' और ''भाषाओं'' पर जैसे शब्दों की व्याख्या के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 1'' के पाठ ''मेमना योग्य है'' में देखें।[9]बड़े बाबुल के विवरण की तुलना पुराने नियम के सोर से करें (यशायाह 23:15-17)।[10]रोम की नीति थी कि जहां तक हो सके स्थानीय नेतृत्व को बनाए रखा जाए। निश्चय ही स्थनीय अधिकारी रोमी अधिकारियों के अधीन होते थे और रोम से सहयोग न करने पर उन्हें पद से हटाया जा सकता था। रोम के रहमो करम पर शासन करने वाले राजाओं का एक उदाहरण हेरोदेसों का वंश है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' में ''हेरोदेस का घराना'' पर चार्ट देखें।)

[11]यिर्मयाह 51:7 से तुलना करें।[12]''आत्मा में'' का अर्थ जो भी हो (अगली टिप्पणी देखें), यह आयत सम्भवतया यह अर्थ नहीं देती कि स्वर्गदूत यूहन्ना को शरीर में लेकर गए। विचार में उसे वचन में अगले दृश्य पर ''ले जाया गया'' था।[13]मूल शास्त्र में केवल ''आत्मा में'' है यानी न तो निश्चित उपपद (''the'') का इस्तेमाल हुआ है और न ही ऐसा कोई संकेत है कि ''आत्मा'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''spirit'' का आरम्भ बड़े अक्षर ''S'' से होना चाहिए। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य, 2'' के पृष्ठ 94 और 95 पर 10:7 पर नोट्स देखें। यही वाक्यांश 4:2 और 21:10 में मिलता है।[14]कई लेखकों का मानना है कि यूहन्ना को वहां ले जाया गया था क्योंकि वेश्या वहीं थी। हो सकता है, परन्तु इससे पुस्तक में पहले मिलने वाले शब्द से ''जंगल'' के अर्थ अलग-अलग निकलेंगे।[15]इस बात की चिन्ता न करें कि आयत 1 में स्त्री ''बहुत से पानियों पर बैठी'' और आयत 3 में वह ''लाल रंग के पशु पर बैठी'' है। मनुष्यजाति के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में, वह बहुत से पानियों पर बैठी थी; साम्राज्य के साथ अपने सम्बन्ध में वह पशु पर बैठी थी। एक दर्शन में रूपक लचकदार होता है; यानी यह बिना सूचित किए बदल सकता है (आयत 9 में इसका अर्थ है कि स्त्री पशु के *सिरों* पर बैठी है, जो बैठने के लिए अस्वाभाविक जगह है, परन्तु हमें इसका अर्थ अक्षरश: नहीं लेना है)।[16]कइयों का विचार है कि यह अजगर था (जिसके सात सिर और दस सींग भी थे); परन्तु वचन में से देखते हुए आगे हम देखेंगे कि पशु (शाही रोम) अधिक उपयुक्त है।[17]सात सिरों और दस सींगों के सामान्य सांकेतिक महत्व के लिए इस पुस्तक के आरम्भ में ''देखो, सुनो और समझो'' पाठ देखें। ये विशेषताएं अध्याय 17 में आगे विशेष महत्व को दिखाएंगी। इस पुस्तक का अगला पाठ देखें।[18]12:3 वाले अनुवादित शब्द ''लाल'' का यूनानी शब्द 17:3 वाला अनुवादित शब्द ''लाल'' का यूनानी शब्द नहीं है; परन्तु इस संदर्भ में उन्हें समानार्थक माना जा सकता है। लाल रंग के सांकेतिक अर्थ के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य 2'' के पाठ ''अपने शत्रु को पहचानें'' में देखें।[19]अध्याय 13 का अध्ययन करते हुए हमने सुझाव दिया था कि ''परमेश्वर की निन्दा वाले नाम'' सम्भवतया वे ईश्वरीय शीर्षक थे, जो राजा लोग अपने नाम के साथ लगाते थे। ये तथ्य कि पशु अब ''निन्दा के नामों से भरा'' है, संकेत हो सकता है कि ईश्वरीय पदनामों का यह निन्दात्मक इस्तेमाल पूरे साम्राज्य में फैला हुआ था।[20]अभी के लिए बाबुल का नियन्त्रण था। अध्याय में आगे पशु ने उस पर नियन्त्रण कर लेना था।

[21]''भेद'' शब्द जैसा कि नये नियम में इस्तेमाल हुआ है, उसके लिए है जिसे बिना प्रकाशन के जाना नहीं जा सकता। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य 2'' के पाठ ''बड़े संदेश वाली छोटी पुस्तक'' में 10:7 पर नोट्स देखें।) 17:5 में ''भेद'' अगले नाम का विवरणात्मक शब्द हो सकता है या यह उस नाम

का भाग हो सकता है। KJV में इसे नाम के भाग के रूप में लिया गया है; NASB में इसे नाम का विवरण देने वाले शब्द के रूप में लिया गया है। दोनों ही तरह से यह संकेत देता है कि वेश्या का नाम सांकेतिक रूप से लिया जाए न कि शाब्दिक रूप से। [22]बैंजनी रंग के बारे में देखें लूका 16:19. ठट्ठा उड़ाए जाने के समय यीशु को पहनाया गया वस्त्र सुसमाचार के एक वृत्तांत (मत्ती 27:28, 29) में लाल रंग का बताया गया है। बैंजनी और लाल रंग के वस्त्र महंगे होते थे क्योंकि इनको रंगना महंगा पड़ता था। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रेरितों के काम, भाग-3" में 16:14 पर नोट्स देखें।) [23]इस पुस्तक के पाठ "बीच हवा में पुलपिट" में 14:8 पर नोट्स देखें। [24]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 92. [25]राबर्ट माउंस, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट सीरीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1977), 273. [26]जेम्स एम. एफर्ड, *रैवलेशन फ़ॉर टुडे* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1989), 103. [27]हेनरी बी. स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन कं.,1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 220. ये पहाड़ियां पैलाटाइन, कैपिटोलाइन, क्यूरीनल, एवेंटाइन, एस्कुलाइन, विमिनल और केलियन हैं। पैलाटाइन और कैपिटोलाइन पहाड़ियों के बीच था। *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की आगामी पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 5" में रोम का मानचित्र देखें। [28]होमेर हेली, *रैवलेशन: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 350. कहा जाता है कि संसार के अन्य नगर सात पहाड़ियों या पहाड़ों पर बसे हैं। यदि यह सही भी हो तो भी प्रकाशितवाक्य 17 की सभी बातों से "मेल खाता" एकदम से सात पहाड़ियों पर बना ध्यान में आने वाला नगर रोम ही है। कुछ टीकाकारों ने इसके जैसे कई नगरों का हवाला दिया है। [29]ब्रूस एम.मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोड: अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन प्रैस, 1993), 85. बड़ा बाबुल अपने पति (परमेश्वर) के साथ बेवफाई करने वाली व्यभिचारिन नहीं बल्कि वेश्या है। 17 से 19 अध्यायों मे उसे धार्मिक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापारिक, राजनैतिक संस्थान के रूप में दिखाया गया है। उसका "धर्म" अधार्मिकता का धर्म यानी प्रसिद्धि और भाग्य की पूजा है। [30]फ्रैंक पैक, *प्रकाशितवाक्य,* भाग-2 (ऑस्टिन, टैक्ससः आर. बी. स्वीट कं., 1965), 16. पिछली पीढ़ियों में "बड़ा बाबुल" की सबसे प्रसिद्ध व्याख्या यह थी कि यह रोमन कैथोलिक चर्च को कहा गया है। परमेश्वर के मार्ग से हमें दूर हटाने की शैतान की कोशिश के *एक* "आकर्षक" ढंग की प्रासंगिकता बनाते हुए मुझे कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु मुझे लगता है कि कैथोलिकवाद को झूठे नबी द्वारा बेहतर ढंग से पेश किया गया है। (इस पुस्तक के आरम्भ में "वह बड़ा भरमाने वाला" पाठ देखें।) बड़ा बाबुल एक वेश्या है न कि अपने पति (परमेश्वर) से बेवफाई करने वाली व्यभिचारिन। 17 से 19 अध्यायों मे उसे धार्मिक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक व्यापारिक, राजनैतिक व्यक्तित्व के रूप में दिखाया गया है। उसका "धर्म" अधार्मिकता का धर्म यानी प्रसिद्धि और भाग्य की पूजा है।

[31]क्लेरेंस ई. मैकार्टने, *मैकार्टने'स इलस्ट्रेशंस* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1965), 413-14. [32]17:6 में अनुवाद हुए शब्द "हैरान रह गया" ("amazed"; न्यू लिविंग ट्रांसलेशन) या "wondered" (NASB) का इस्तेमाल 13:3 में पशु पर "चकित" होने वालों के लिए किया गया। [33]इसका मूल "fornication" ही नहीं बल्कि *porn* है। (NASB में इसका अनुवाद "अनैतिकता" हुआ है), परन्तु "वेश्या" भी है। मूल पवित्र शास्त्र में 1, 2, 4 और 5 आयतों में *porn* शब्द पांच बार आया है। कुछ संस्करणों में इन आयतों में *porn* का अनुवाद "व्यभिचार" हुआ है, परन्तु "व्यभिचार" के लिए अलग से यूनानी शब्द है। [34]माइकल विल्कोक, *आई सॉ हैवन ओपन्ड: द मैसेज ऑफ़ रैवलेशन,* द बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1975), 159. [35]माथे पर नाम (और अन्य चिह्न या मुहर) लगने के कई उदाहरण हैं (3:12; 7:3; 9:4; 13:17; 14:1; 22:4)। यह हो सकता है कि हमें वेश्या का नाम उसके हाथ पर लिखे होने के बजाय उसके माथे पर देखें। [36]"घृणित वस्तुएं" पवित्र शास्त्र में आमतौर पर मूर्तिपूजा तथा मूर्तिपूजा से जुड़ी बातों को कहा है (व्यवस्थाविवरण 32:16; 2 राजा 21:11; यिर्मयाह 44:22)। मूर्तिपूजा राजा की पूजा का अभिन्न अंग थी। [37]यदि आप वहां रहते हैं जहां इस शब्द का अर्थ है तो आप "वेश्यावृत्ति की नसबंदी करना" कह सकते हैं। [38]पवित्र शास्त्र में, जान-बूझकर आज्ञा तोड़ने के उदाहरण के रूप में

वेश्या का इस्तेमाल हुआ है (उदाहरण के लिए देखें नीतिवचन 5:3-5; 23:27, 28; यिर्मयाह 5:7, 9; होशे 3:3; 1 कुरिन्थियों 6:15, 16)। वेश्या का पाप शारीरिक पापों के दण्ड में शामिल है (उदाहरण के लिए गलातियों 5:19)। वेश्यावृत्ति के पाप के बारे में दो बातों पर ज़ोर दिया जाना चाहिए: (1) आवश्यक नहीं कि यह सबसे बड़ा पाप हो (जैसा कि लगता है कि कई लोग मानते हैं), परन्तु यह एक ऐसा पाप *है* जो प्राण का नाश कर सकता है। (2) यदि कोई वेश्या अपने पाप से मन फिराकर परमेश्वर की ओर मुड़ती और अपने जीवन को बदल लेती है तो उसे क्षमा किया जा सकता है (1 कुरिन्थियों 6:9-11; देखें इब्रानियों 11:31; याकूब 2:25)।[39]मन्दिर की पूजा (राजा की पूजा सहित) में शारीरिक पाप सम्मिलित था। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 1" के पृष्ठ 155-156 पर 2:14 पर नोट्स देखें।) [40]"वेश्यावृत्ति" शब्द का इस्तेमाल "अपनी योग्यताओं, गुणों या नाम को गलत उद्देश्य के लिए बेचने" के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

[41]माउंस, 307. [42]यह और अगला वाक्य हेली, 343 से लिए गए थे। [43]पीछे टिप्पणी 5 देखें। वेश्या की तुलना अध्याय 12 वाली स्त्री से भी की गई है, जो कलीसिया का थोड़ा सा अलग प्रतिनिधित्व करती है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 3" के पाठ "अपने शत्रु को पहचानें" में "सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स" देखें।) [44]और अन्तर किए जा सकते हैं: वेश्या से प्रेम किया जा रहा था जबकि दुल्हन सताई जा रही थी। इसके अलावा दोनों को *नगर* कहा गया है, जिसमें एक "नया" बाबुल है जबकि दूसरा "नया यरूशलेम" (21:2)। दुल्हन को कलीसिया (विशेषकर विश्वासी कलीसिया) कहा गया है। (*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक "प्रकाशितवाक्य, 5" के पाठ "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु" में 19:17-19 पर नोट्स देखें।) [45]"पवित्र लोगों" और "गवाहों" में कोई अन्तर नहीं किया जा सकता क्योंकि दोनों की वेश्या द्वारा हत्या कर दी गई थी। यह, यह कहने का काव्यात्मक ढंग है कि *हर* मसीही जिसे रोम ने शहीद किया था। [46]यह वाक्य डैनियल रस्सल, *प्रीचिंग द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: अबिंग्डन प्रैस, 1935), 197. [47]टेसिटुस *एन* 15.44. माउंस, 310 में उद्धृत। कुरलेनिसुय टेसिटुस (लगभग 56 ईस्वी-लगभग 115 ईस्वी) एक रोमी सूबेदार महानतम रोमी इतिहासकारों में से एक था। वह डोमिशियन के खतरनाक शासन में रहा। माउंस ने यह भी लिखा कि "सरकारी चकलों में गुप्त रूप से काम करने वाली रोमी मलिका की दुष्ट और नीच लुचपन का जुवनल का विवरण प्राचीन राजधानी में पाई जाने वाली अनैतिकता की गहराई का संकेत है" (वही)। [48]विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन* अंक 2, संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 145. लेसियुस एनायुस सेनेका (लगभग 4 ईपू-65 ईस्वी) यूनानी सतोइकी परम्परा में सबसे प्रभावशाली दार्शनिक लेखकों में से एक था। [50]जे. डब्ल्यू. राबर्ट, *द रैवलेशन टू जॉन (द अपोकलिप्स),* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़ (ऑस्टिन टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1974),136.

[51]यह उदाहरण डेविड एफ.बर्गेस कं., *इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ सरमन इलस्ट्रेशन* (सेंट लुईस: कॉन्कोर्डिया पब्लिशिंग हाउस, 1988), 186. [52]यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करते हैं तो सुनने वालों को बताएं कि विश्वास और आज्ञाकारिता में वे परमेश्वर की ओर कैसे भाग सकते हैं। इस पुस्तक में "ध्यान लगाए रखना" पाठ में टिप्पणी 53 देखें।

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. अजगर के तीन साथियों के नाम बताएं। वे कौन से तीन ढंगों को दर्शाते हैं (जिनसे शैतान हमें अपनी इच्छा पूरी कराने की कोशिश करता है)?
2. पाठ में बड़ी वेश्या के बहकावे से बचने के तीन ढंग बताए गए हैं। उनमें से पहला क्या है? क्या आप मानते हैं कि परीक्षा बहुत "प्रलोभन देने वाली" हो सकती है?
3. आयत 1 में "बहुत से पानी" का क्या अर्थ है?

4. स्त्री लाल रंग के पशु पर बैठी थी। पाठ के अनुसार यूहन्ना के समय में यह पशु कौन था ?
5. वेश्या को ''बड़ा बाबुल'' कहा गया है। बाबुल के इतिहास पर अपनी जानकारी बताएं। यहूदी सोच के अनुसार बाबुल क्या दर्शाता था ?
6. अध्याय 17 के ''बड़ा बाबुल'' से कौन या क्या दर्शाया गया ? कुछ सम्भावनाएं क्या हैं ? पाठ के अनुसार बड़ा बाबुल यूहन्ना के समय में कौन था ?
7. पाठ के अनुसार आज बड़ा बाबुल वह भक्तिहीन संसार है, जो परीक्षाओं से हमारे मार्ग को भर देता है। परीक्षा और इसके आकर्षण पर चर्चा करें। क्या आप मानते हैं कि शैतान आपकी कमज़ोरियों को जानता है और उनका शोषण करने की कोशिश करता है ?
8. बड़ी वेश्या के बहकावे में आने से बचने के लिए दूसरा सुझाव क्या था ?
9. वेश्यावृत्ति को संसार द्वारा आमतौर पर अच्छा बनाकर दिखाया जाता है, परन्तु बाइबल इसके बारे में क्या बताती है ? कोई वेश्या ''ऐसा पाप जो क्षमा न किया जा सके'' करती है ? क्या वेश्या का उद्धार हो सकता है ? यदि हां, तो कैसे ?
10. क्या हम शारीरिक वेश्यावृत्ति के अलावा ''वेश्यावृत्ति'' के दोषी हो सकते हैं ? कुछ तरीके बताएं जिनसे ऐसा हो सकता है।
11. बड़ी वेश्या के बहकावे में आने से बचने के लिए तीसरा सुझाव क्या था ?
12. कहा जाता है कि 1 यूहन्ना 2:15-17 प्रकाशितवाक्य 17 और 18 का अच्छा सार है। इन आयतों पर और हमारे जीवनों में इनकी प्रासंगिकता पर चर्चा करें।

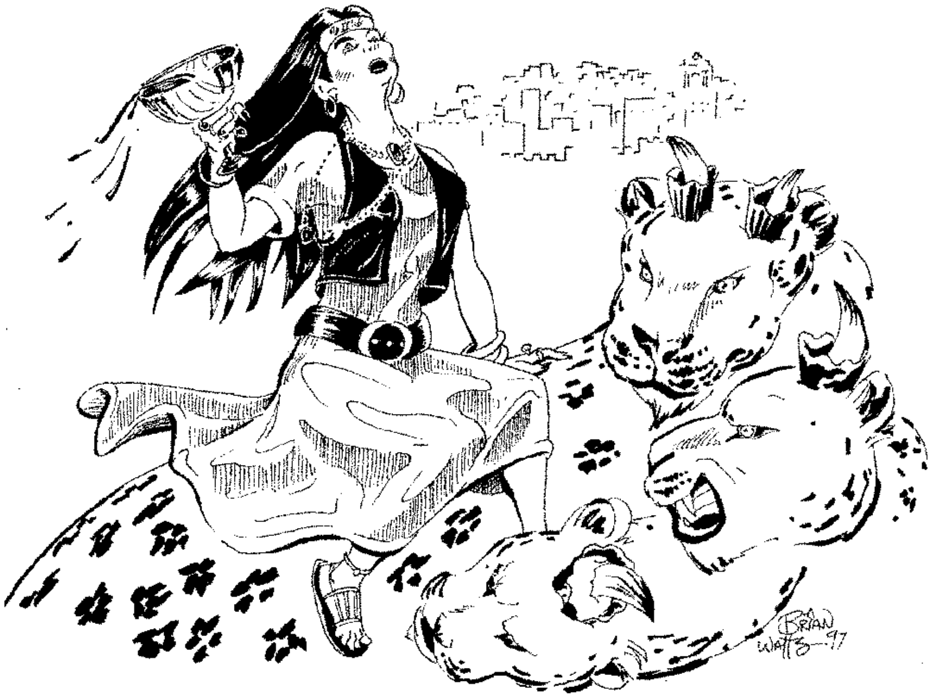

बड़ा बाबुल, पृथ्वी की वेश्याओं और घृणित वस्तुओं की माता (17:5)